INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भूमिका

[1]Ishant Kumar, [2]Dr. Jiley Singh
[1]Research Scholar, [2]Supervisor
[1-2] Department of Political Science, Malwanchal University, Indore, Madhya Pradesh, India

अमूर्त

राजनीति में युवाओं की भागीदारी का महत्व इस तथ्य में निहित है कि वे सामाजिक मुद्दों के प्रति अधिक जागरूक होते हैं और उनके पास समस्याओं का समाधान करने के नए और रचनात्मक तरीके होते हैं। इस संदर्भ में, यह आवश्यक है कि युवाओं को राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इसके लिए उन्हें राजनीतिक शिक्षा, नेतृत्व के अवसर, और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शामिल किया जाना चाहिए। इससे न केवल उनकी राजनीतिक समझ और कौशल में वृद्धि होगी, बल्कि वे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को भी अधिक प्रभावी ढंग से निभा पाएंगे।

कीवर्डः भागीदारी, राजनीति, चुनौति, आवश्यकता, गतिविधि, आवश्यकता।

परिचय

भारत, दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र, अपने राजनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। चूंकि राष्ट्र कई चुनौतियों और आकांक्षाओं से जूझ रहा है, इसलिए भारत को जिस राजनीतिक परिवर्तन की आवश्यकता है, उसकी जांच करना अनिवार्य है। इस परिवर्तन के मूल में राजनीति में युवाओं की सक्रिय भागीदारी है, एक ऐसा विषय जिस पर बारीकी से विचार करने की आवश्यकता है। इस लेख में, हम भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भूमिका, भारतीय राजनीति में उनके सामने आने वाली चुनौतियों और उनकी राजनीतिक भागीदारी के महत्व का पता लगाएंगे।

लोकतंत्र, लोगों द्वारा और लोगों के लिए सरकार के रूप में, अपने अस्तित्व के लिए अपने नागरिकों की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर करता है। लोकतांत्रिक प्रणाली के स्वास्थ्य को मापने में, युवा मतदाताओं की भागीदारी पर ध्यान केंद्रित करना तेजी से महत्वपूर्ण होता जा रहा है। वे अगली चढ़ी हैं, भविष्य के नेता हैं, और लोकतंत्र के भविष्य के निर्माण में उनकी भूमिका को समझना महत्वपूर्ण है। चुनाव लोकतांत्रिक प्रक्रिया का मुख्य स्तंभ हैं। जैसे–जैसे आम चुनाव नजदीक आ रहे हैं, युवा मतदाताओं को शामिल होने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए, यह सवाल एक प्रमुख फोकस के रूप में उभर रहा है। एक गहन अध्ययन लोकतंत्र के भविष्य को आकार देने में युवा मतदाता भागीदारी की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। युवा मतदाता में लोकतंत्र की नींव को मजबूत करने की बहुत क्षमता है। हालांकि, इस समूह के सामने चुनौती राजनीतिक प्रणाली में विश्वास की कमी और उदासीनता की भावना है। यह समझने के लिए कि हम युवा मतदाताओं को सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए कैसे मार्गदर्शन और प्रोत्साहित कर सकते हैं, सभी दलों के सहयोग की आवश्यकता है।

युवा मतदाताओं की भागीदारी सिर्फ चुनावों में मतदान करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि लोकतंत्र की भावी दिशा को आकार देने के बारे में भी है। इंडोनेशिया में 2024 के चुनाव के संदर्भ में, 114 मिलियन मिलेनियल और जेन जेड मतदाताओं का मतलब है कि चुनाव परिणाम निर्धारित करने वाला सबसे बड़ा वर्ग युवा मतदाता है। युवा मतदाताओं की भागीदारी यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि उनके हितों

का प्रतिनिधित्व किया जाए और लोकतंत्र स्वस्थ रूप से विकसित हो सके। युवा मतदाताओं की भागीदारी बढ़ाने के प्रयास में, राजनीतिक शिक्षा में सुधार, सोशल मीडिया का बुद्धिमानी से उपयोग और राजनीतिक व्यवस्था में सुधार जैसे ठोस कदम लागू किए जाने चाहिए। हम देख सकते हैं कि इस चुनौती के लिए सरकार, शैक्षणिक संस्थानों, राजनीतिक दलों और नागरिक समाज को शामिल करते हुए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

युवा मतदाताओं पर विशेष ध्यान देकर, न केवल चुनाव प्रचार के दौरान बल्कि राजनीतिक समझ और नागरिक जिम्मेदारी की भावना पैदा करने के लिए चल रहे प्रयासों के माध्यम से, इंडोनेशिया एक मजबूत और अधिक समावेशी लोकतंत्र की ओर आगे बढ़ सकता है। हमारे लोकतंत्र का भविष्य युवा चढ़ी की भागीदारी पर निर्भर करता है, और यह समय है कि हम इंडोनेशिया के राजनीतिक भविष्य के लिए एक ठोस आधार बनाने के लिए मिलकर काम करें।

साहित्य की समीक्षा

झांग, वेइयू. (2022).यह अध्ययन एक देश के मामले का उपयोग करके एक सामान्य प्रश्न का उत्तर देता हैरू सिंगापुर में युवा चढ़ी की राजनीतिक अलगाव को क्या आकार देता है? चढ़ीगत अंतर और संस्थागत प्रभाव के दृष्टिकोण को लेते हुए, यह अध्ययन गैर–पश्चिमी संदर्भ, सिंगापुर में राजनीतिक और (नए) मीडिया परिदृश्य परिवर्तनों के उतार–चढाव को दिखाने के लिए समय के आयाम पर प्रकाश डालता है। 2011 बनाम 2020 में 19–30 वर्ष की आयु के बीच आयोजित फोकस समूह चर्चाओं की तुलना करके, यह शोधपत्र पाता है कि राजनीति में समान रूप से अरुचि का दावा करने के बावजूद, 2011 के युवा 2020 के युवाओं की तुलना में राजनीतिक समाचारों के प्रति अधिक चौकस थे। राजनीतिक संस्थानों में बदलाव ने इस बढ़ी हुई स्थिति जन्य भागीदारी को जन्म दिया। हालाँकि, 2011 के युवाओं द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से देखी गई राजनीति की बढ़ती जटिलता और प्रतिस्पर्धा के कारण 2020 में ध्यान देने और कार्रवाई करने के बीच का अंतर अभी भी बड़ा था, या 2011 की तुलना में भी बड़ा था।

बिनी, एलिजाबेथ और अमोएटेंग, एचेमपोंग (2019)। प्रस्तुत शोधपत्र में घाना विश्वविद्यालय के 36 महिला और पुरुष स्नातक छात्रों के नमूने से डेटा संग्रह उपकरण के रूप में फोकस समूह साक्षात्कार चर्चाओं का उपयोग किया गया ताकि उम्र, लिंग, शिक्षा और धर्म जैसे सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव की जांच की जा सके जो राजनीति में उनकी भागीदारी को प्रभावित करते हैं। डेटा के प्रवचन और विषयगत विश्लेषण ने राजनीतिक भागीदारी के कई मात्रात्मक शोध निष्कर्षों की पुष्टि की। पुरुषों द्वारा अपनी महिला समकक्षों की तुलना में राजनीति में रुचि व्यक्त करने और भाग लेने की अधिक संभावना थी, जबकि युवा युवाओं द्वारा वृद्ध युवाओं की तुलना में राजनीति में भाग लेने की कम संभावना थी। कई मात्रात्मक अध्ययनों के निष्कर्षों के विपरीत, शैक्षिक स्तर का राजनीति में भागीदारी के साथ विपरीत संबंध था, जबकि युवाओं द्वारा धर्म और राजनीतिक भागीदारी के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं देखा गया था। युवाओं द्वारा राजनीति में अपेक्षाकृत कम भागीदारी राजनीति में भ्रष्टाचार और अविश्वास की उनकी भावना और उम्र और लिंग के आधार पर भेदभाव की व्यापकता का परिणाम है।

बैरेट, मार्टिन और दिमित्रा, पाची। (2019)। यह पुस्तक युवा नागरिक और राजनीतिक जुड़ा व पर किए गए शोध का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करती है। यह मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान और शिक्षा सहित सामाजिक विज्ञान के कई विषयों से प्राप्त निष्कर्षों पर आधारित है। पुस्तक में युवा जुड़ा व के कई रूपों का वर्णन किया गया है, युवा जुड़ा व कैसे विकसित होता है, इसके विकास को बढ़ावा देने या बाधित करने वाले कारक और युवा लोगों के नागरिक और राजनीतिक जुड़ा व को सुविधाजनक बनाने और प्रोत्साहित करने के लिए की जाने वाली कार्रवाइयों का वर्णन किया गया है। कई अलग–अलग राष्ट्रीय

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

संदर्भों और बहुराष्ट्रीय अध्ययनों के माध्यम से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर, पुस्तक निम्नलिखित की जांच करती है युवा नागरिक और राजनीतिक जुड़ा व के विभिन्न रूप मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, जनसांख्यिकीय और मैक्रो प्रासंगिक कारक जो युवा जुड़ा व से जुड़े हैं इन कारकों के बीच अंतर–संबंध युवा नागरिक और राजनीतिक जुड़ा व को बढ़ावा देने के लिए माता–पिता, स्कूल, युवा कार्यकर्ता, सामुदायिक संगठन, नीति निर्माता और राजनेता जो कार्रवाई कर सकते हैं। यह पुस्तक इस विशाल और विविध शोध का सैद्धांतिक संश्लेषण भी प्रदान करती है, ऐसा करने के लिए युवा जुड़ा व के एक एकीकृत बहु–स्तरीय पारिस्थितिक मॉडल का उपयोग करती है। यह क्षेत्र में अनसुलझे मुद्दों की पहचान करता है, और भविष्य के शोध के लिए कई सुझाव प्रदान करता है। युवा नागरिक और राजनीतिक जुड़ा व शोधकर्ताओं, शिक्षकों, युवा कार्यकर्ताओं, नागरिक समाज कार्यकर्ताओं, नीति निर्माताओं और राजनेताओं के लिए एक अमूल्य संसाधन है जो युवा लोगों की नागरिक और राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करने वाले कारकों और प्रक्रियाओं की अद्यतन समझ हासिल करना चाहते हैं, और युवा जुड़ा व को कैसे बढ़ावा दिया जाए। यह पुस्तक उन इच्छुक आम पाठकों के लिए भी उपयोगी होगी जो इस क्षेत्र में समकालीन शोध के निष्कर्षों की समझ हासिल करना चाहते हैं।

पारख, दिशांत. (2020). यह पत्र २०१४ में आयोजित १६वें लोकसभा चुनावों के दौरान भारतीय चुनावी राजनीति में युवाओं की घटती भागीदारी में संस्थानों की भूमिका की जांच करता है। विशेष रूप से वंशवादी उत्तराधिकार मॉडल से संबंधित युवा संसद सदस्यों (एमच) का अनुपात असमान है। जनसांख्यिकीय संकेतकों से पता चला है कि २०१८ तक भारत की औसत आयु २७.६ वर्ष है जबकि एक औसत भारतीय विधायिका नेता (संसद सदस्य) ५६ वर्ष है। तुलनात्मक और ऐतिहासिक विश्लेषण के आधार पर इस प्रकार के प्रतिनिधित्व के विभिन्न कारण हो सकते हैं, चाहे वह सामाजिक–आर्थिक कारक हों या संस्थागत बाधाएं। शोध युवाओं द्वारा चुनावी राजनीति के प्रति अरुचि के प्रमुख कारणों का पता लगाने का प्रयास करता है जो लोकतंत्र की जीवंतता के लिए हानिकारक है। यह युवा आबादी के नेतृत्व में राजनीतिक भागीदारी के समकालीन तरीकों की आलोचनात्मक जांच करता है

काली, मोएकत्सी और रोमा। (2014)। लेसोथो के मंत्री पदों और राष्ट्रीय विधानसभा में युवाओं की कमी है। फिर भी, लोगों को यह कहते हुए सुनना आम बात है कि युवा कल के नेता हैं। इस शोध का उद्देश्य नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ लेसोथो (छन्स्) के युवाओं के बीच राजनीतिक भागीदारी के स्तर को स्थापित करना था। इस अध्ययन के लिए डेटा 15 उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया गया था। अध्ययन में पाया गया कि युवा आम चुनावों में मतदान करने और राजनीतिक दलों का समर्थन करने में कम भाग लेते हैं, खासकर जब उनकी सदस्यता के लिए नामांकन करने की बात आती है। इसके विपरीत, राजनीतिक सक्रियता का उपयोग करके मापा गया, छन्स् में युवाओं के बीच राजनीतिक भागीदारी का स्तर उच्च पाया गया। उनकी राजनीतिक भागीदारी के निम्न स्तर के बावजूद, यह स्थापित किया गया कि छन्स् के युवा आम चुनावों में मतदान करने और राजनीतिक पार्टी के उत्पाद खरीदने के माध्यम से राजनीति में भाग लेना पसंद करते हैं।

युवाओं के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम

युवाओं के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम 2013–2022 का एक उद्देश्य युवा महिलाओं और पुरुषों की भागीदारी और प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देना (6.2.1) है। इस उद्देश्य को पूरा करने का मानदंड सभी स्तरों पर चुनावों में युवाओं की भागीदारी को बढ़ाना है। साथ ही, लक्ष्य उन युवाओं (18 से 29 वर्ष की आयु वाले) के अनुपात को कम करना है जो सभी स्तरों पर चुनावों में मतदान नहीं करते हैं (उदाहरण के लिए, स्लोवेनिया में 2008 में 39.7%, जबकि यूरोचय संघ का औसत 28.2% था)ईवीएस) अपेक्षित विकासात्मक प्रभाव यह होगा कि

सामाजिक मामलों के प्रबंधन में युवाओं की भागीदारी बढ़ेगी ।

इसमें पांच मुख्य प्राथमिकता वाले उपखंड हैं

1. लिंग संतुलन को ध्यान में रखते हुए युवाओं के बीच पारंपरिक राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देना.

स्लोवेनिया गणराज्य के उपलब्ध बजट और स्थानीय समुदायों के बजट के भीतर वित्तपोषण प्रदान किया जाएगा। युवा लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करना समाज के जीवन में युवा लोगों की सफल और रचनात्मक भागीदारी की कुंजी है। युवा लोगों की भागीदारी के साथ, वे लोकतंत्र और वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था के कामकाज के बारे में भी सीखते हैं, और एक कार्यशील लोकतंत्र के लिए आवश्यक कौशल प्राप्त करते हैं, जैसे परामर्श, बातचीत, पैरवी, आदि। बचपन और शुरुआती युवावस्था में निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में अपनी भागीदारी के साथ, वे यह भी जान सकते हैं कि सार्वजनिक (राजनीतिक) निर्णय कैसे लिया जाता है। किसी भी मामले में, युवा लोगों की भागीदारी केवल सीखने से कहीं अधिक है, और युवाओं को वास्तव में निर्णय लेने में अपनी बात कहने की आवश्यकता है।

2. युवा लोगों के बीच अपारंपरिक राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देना और उसका समर्थन करना

- स्लोवेनिया गणराज्य के उपलब्ध बजट और स्थानीय समुदायों के बजट के भीतर वित्तपोषण प्रदान किया जाएगा। यह कानून सार्वजनिक मामलों के प्रबंधन में युवाओं की सक्रिय भागीदारी के लिए विभिन्न विकल्पों को नियंत्रित करता है, जिनका उपयोग युवा लोग रुचि की कमी या जानकारी की कमी के कारण नहीं करते हैं। इसलिए, जागरूकता को बढ़ावा देने, युवाओं को सूचित करने और भागीदारी के निम्नलिखित पहले से स्थापित रूपों में उनकी सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है

• विधायी प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी की संभावना (विधान विनियमन पर संकल्पय ई–सरकार), जहां भागीदारी पर कोई प्रतिबंध नहीं हैं

• युवा क्षेत्र में संगठन के विभिन्न रूप और प्रकार, जो युवाओं को एक साथ लाते हैं (युवा केंद्र, स्थानीय समुदाय युवा परिषद और राष्ट्रीय युवा संगठन)।

3. युवा लोगों के साथ परामर्श के स्थायी तंत्र को बढ़ावा देना और मजबूत करना.

स्लोवेनिया गणराज्य के उपलब्ध बजट और स्थानीय समुदायों के बजट के भीतर वित्तपोषण प्रदान किया जाएगा। इस अर्थ में, संरचित संवाद महत्वपूर्ण है। इस प्रकार संरचित संवाद का उद्देश्य युवा लोगों और नीति–निर्माताओं के बीच सहयोग को गहरा करना है। इसे सभी स्तरों पर युवा लोगों और युवा संगठनों के साथ परामर्श को भी मजबूत करना चाहिए, ताकि इससे सभी हितधारकों को लाभ हो युवा संगठन, युवा, युवा शोधकर्ता और (सार्वजनिक) नीति निर्माता।

4. युवा भागीदारी के महत्व को बढ़ावा देना.

स्लोवेनिया गणराज्य के उपलब्ध बजट के भीतर वित्तपोषण प्रदान किया जाएगा। युवा संगठनों में भागीदारी और युवा भागीदारी के लिए प्रमुख बाधाओं में से एक भागीदारी की संभावनाओं के बारे में अपेक्षाकृत कम जानकारी है। यह प्राथमिकता उपखंड सक्रिय नागरिकता को बढ़ावा देने की आवश्यकता और उपयोगिता

को भी कवर करता है।

5. युवा क्षेत्र में सूचना और परामर्श को सुदृढ बनाना.

स्लोवेनिया गणराज्य के उपलब्ध बजट के भीतर वित्तपोषण प्रदान किया जाएगा। सूचना उन प्रमुख क्षेत्रों में से एक है जो युवा लोगों द्वारा स्वायत्तता की प्राप्ति और समाज में उनकी सक्रिय भागीदारी को प्रभावित करते हैं। युवाओं को सूचित करने में शिक्षा प्रणाली और कार्यस्थल पर युवा संगठनों और अन्य गैर सरकारी संगठनों की भागीदारी और विभिन्न तंत्रों (राजनीतिक दलों, चुनावों में उम्मीदवार के रूप में खड़े होना, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्णय लेने वालों से संवाद करना) द्वारा निर्णयों में जनता की भागीदारी भी शामिल है।

युवा लोगों के बीच अपारंपरिक राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देना और उसका समर्थन करना–

1. **युवा लोगों के साथ परामर्श के स्थायी तंत्र को बढावा देना और मजबूत करना–**

धारक युवा कार्यालय है। अन्य सहयोगी अभिनेताओं में स्लोवेनिया की राष्ट्रीय युवा परिषद, स्थानीय समुदाय युवा परिषद, युवा क्षेत्र और युवा समुदाय शामिल हैं।

युवा भागीदारी के महत्व को बढ़ावा देना–

धारक युवा कार्यालय है। अन्य सहयोगी अभिनेता युवा क्षेत्र और शिक्षा, विज्ञान धारक आंतरिक मंत्रालय है। अन्य सहयोगी प्राधिकरण युवा कार्यालय, स्थानीय समुदाय और युवा क्षेत्र हैं और खेल मंत्रालय हैं।

युवा क्षेत्र में सूचना और परामर्श को सुदृढ बनाना .

धारक युवा कार्यालय है। अन्य सहयोगी अभिनेता युवा क्षेत्र है।

लाभ और हानि

संभावित लाभ

- ***नये दृष्टिकोण***

युवा राजनेता विधायी प्रक्रिया में नए विचार और समकालीन दृष्टिकोण ला सकते हैं। वे अक्सर प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक न्याय जैसे वर्तमान मुद्दों के प्रति अधिक सजग होते हैं।

- **अधिक प्रतिनिधित्व**

चूंकि जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा 35 वर्ष से कम आयु का है, इसलिए आयु सीमा कम करने से संसद में युवा हितों को अधिक आनुपातिक प्रतिनिधित्व मिल सकता है।

- **वैश्विक रुझान**

कई लोकतंत्रों ने युवा उम्मीदवारों को अपनाया है। उदाहरण के लिए, यू.के. ने 2006 में अपनी आयु सीमा घटाकर 18 वर्ष कर दी थी। इसी तरह, फ्रांस और अन्य देशों ने भी युवाओं की भागीदारी के प्रति बदलते

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

दृष्टिकोण के साथ अपनी आयु आवश्यकताओं को कम कर दिया है।

- **नवाचार और अनुकूलनशीलता**

युवा राजनेता अपने अनूठे अनुभवों और कौशल का उपयोग करके जटिल मुद्दों के लिए अभिनव समाधान पेश कर सकते हैं। उनके शामिल होने से एक अधिक गतिशील और उत्तरदायी राजनीतिक प्रणाली बन सकती है।

संभावित नुकसान

- ***अनुभव की कमी***

आलोचकों का तर्क है कि युवा उम्मीदवारों के पास जटिल राजनीतिक मुद्दों पर सूचित निर्णय लेने के लिए जीवन का अनुभव या परिपक्वता नहीं हो सकती है। चुनाव आयोग ने उम्मीदवारी के लिए न्यूनतम आयु में कमी का विरोध करने के लिए इन कारणों का हवाला दिया है।

- **स्थापित मानदंड**

नेतृत्व पर पारंपरिक विचार अक्सर राजनीतिक योग्यता को उम्र से जोड़ ते हैं, जिससे युवा उम्मीदवारों के खिलाफ प्रतिरोध होता है। यह संदेह युवा लोगों के लिए राजनीतिक क्षेत्र में अपनी पकड़ बनाना मुश्किल बना सकता है।

- **विशेषज्ञता और उत्साह में संतुलन**

यद्यपि युवा ऊर्जा परिवर्तन ला सकती है, लेकिन प्रभावी शासन के लिए आवश्यक अनुभव और ज्ञान के साथ इसका संतुलन बनाना आवश्यक है।

भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिका

युवा किसी भी देश में सामाजिक परिवर्तन के मुख्य अभिकर्ता होते हैं। इतिहास साक्षी है कि विश्व में अब तक जो भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं, चाहे वह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक हों, उनका मुख्य आधार युवा ही रहे हैं। भारत में भी युवाओं का समृद्ध इतिहास रहा है। प्राचीन काल में आदि गुरु शंकराचार्य से लेकर गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी तक युवाओं ने धार्मिक और सामाजिक सुधार का बीडा उठाया था। आचार्य कौटिल्य ने मगध की जनता को नंद वंश के शासन से मुक्ति दिलाने के लिए युवा चंद्रगुप्त मौर्य को अपना मुख्य साधन बनाया था। पुनर्जागरण के दौरान राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे युवा बुद्धिजीवियों ने विवेकानंद के साथ मिलकर धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलन का नेतृत्व किया था। स्वामी विवेकानंद ने अपनी वाकपटुता और पांडित्य से शिकागो धर्म परिषद (1893) में भारतीय धर्म दर्शन की विजय पताका फहराई थी। उनके विस्मयकारी भाषण के बाद पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों के लोग भी भारतीय ज्ञान परंपरा से चकित रह गए थे।

आधुनिक समय में रानी लक्ष्मीबाई, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और नेता जी सुभाष चंद्र बोस जैसे युवा क्रांतिकारी अंग्रेजों से भागकर आए थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आंदोलनों की सफलता में कई युवा नेताओं ने योगदान दिया और उनके नेतृत्व में भारत को आजादी मिली। आजादी से लेकर आज तक के समकालीन

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

भारत के इतिहास की बात करें तो इस दौरान हुए कई आंदोलनों और बदलावों का नेतृत्व युवाओं ने किया है। भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने (हरित क्रांति) से लेकर परमाणु ऊर्जा बनाने तक की जिम्मेदारी युवाओं ने ही उठाई। कंप्यूटर क्रांति और नई आर्थिक नीति युवा दिमाग की देन थी। अगर आज के भारत की बात करें तो भारत दुनिया का सबसे युवा देश है। जनसंख्या के आंकडों के मुताबिक यहां 15 साल से 18 साल तक के लोग हैं।भारत में पच्चीस वर्ष की आयु के लोग कुल जनसंख्या का पचास प्रतिशत हैं, जबकि पैंतीस वर्ष तक की आयु के लोग कुल जनसंख्या का पैंसठ प्रतिशत हैं।इस कारण से इसे विश्व स्तर पर देखा जाता है और इक्कीसवीं सदी की महाशक्ति बनने की भविष्यवाणी की गई है। युवा आबादी ही देश की प्रगति को गति दे सकती है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए च जे अब्दुल कलाम ने कहा था कि हमारे पास युवा संसाधन के रूप में अपार संपदा है और यदि समाज के इस तत्व को सशक्त बनाया जाए तो हम शीघ्र ही महाशक्ति बनने का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। यह शत–प्रतिशत सत्य है कि खनिज संपदा के बिना भी कोई देश विकास कर सकता है, लेकिन मानव संसाधन के बिना किसी देश के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम जापान को ले सकते हैं, जिसने खनिज संपदा के अभाव के बावजूद अपने मानव संसाधन के बल पर विकास की कीर्तिमान लिखा और आज विश्व की तीन सबसे बढ़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारत के राज्यों की बात करें तो बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओडिशा संसाधनों के बावजूद पिछड़े हुए हैं जबकि केरल, कर्नाटक विकास के मामले में आगे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास में निवेश कर जनशक्ति को मानव पूंजी में परिवर्तित करने से भविष्य में निश्चित रूप से अच्छा लाभ मिलेगा। मानव संसाधन का यदि उचित नियोजन और प्रबंधन न किया जाए तो यह विकास में सबसे बढ़ी बाधा है। उदाहरण के लिए हम आतंकवाद, नक्सलवाद, युवा उग्रवाद को ले सकते हैं। आतंकवाद, नक्सलवाद और उग्रवाद जैसे नकारात्मक तत्व भी युवाओं को अपना एजेंडा पूरा करने का माध्यम बनाते हैं। आतंकवाद का एक उदाहरण जम्मू–कश्मीर से लिया जा सकता है, जहाँ आतंकवादी अपने नापाक मंसूबों को अंजाम देने के लिए युवाओं को मूर्ख बना रहे हैं। अस्सी के दशक में पंजाब भी इसी तरह के संकट से जूझ रहा था। पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ, झारखंड जैसे राज्यों में फैला नक्सलवाद भी युवाओं के कंधों पर बंदूक रखकर उन्हें निशाना बना रहा है।

पूर्वोत्तर में भी यही स्थिति है। देश में तेजी से फैल रही नशे की लत भी युवाओं पर भारी पड़ रही है, पंजाब का उदाहरण सामने आता है। ऐसी विकट स्थिति में युवाओं को उचित मार्गदर्शन की सख्त जरूरत है। भारत की युवा शक्ति को सकारात्मक कार्यों में लगाने की जरूरत है। ऐसे प्रेरणास्रोतों और मार्गदर्शकों की जरूरत है, जो युवा चढ़ी को सकारात्मक और अच्छा रास्ता दिखा सकें। लोगों का मानना है कि बेरोजगारी एक कारण है, जिससे युवा निराश होकर भटक जाते हैं। लेकिन युवाओं को अपनी यह मानसिकता बदलनी चाहिए कि रोजगार पाने का एकमात्र जरिया सरकारी नौकरी है। भारतीय समाज मानता है कि सरकारी नौकरी ही जीवन में सफलता का पैमाना है। समाज में लोगों की यह धारणा बदलनी चाहिए। उदारीकरण और सूचना क्रांति के आधुनिक युग में रोजगार और स्वरोजगार के अवसरों की कोई कमी नहीं है। इसका उदाहरण अमेरिका और यूरोचय देशों से लिया जा सकता है, जहां के युवा इन अवसरों का भरपूर लाभ उठा रहे हैं।

भारत में भी हम गुजरात का उदाहरण ले सकते हैं जहाँ लोगों ने उद्यमिता के माध्यम से रोजगार प्रदान करके खुद को और देश के अन्य लोगों को सशक्त बनाया है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। इसके बावजूद यहाँ राजनीति में युवाओं की भागीदारी बहुत कम है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। इसके बावजूद यहाँ राजनीति में युवाओं की भागीदारी बहुत कम है। अक्सर देखा गया है कि युवा राजनीति के प्रति अपनी नकारात्मक भावनाओं के कारण राजनीति में शामिल नहीं होना चाहते

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

हैं। लेकिन उन्हें यह समझना चाहिए कि जब तक वे राजनीति में भाग नहीं लेंगे, तब तक राजनीति से नकारात्मकता दूर नहीं होगी।

भारत के संविधान ने अठारह वर्ष से अधिक आयु के युवाओं को वोट देने का अधिकार दिया है। ऐसे में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। इसके अलावा युवाओं को अच्छे मानव संसाधन में बदलने के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। देश के स्कूलों और विश्वविद्यालयों में अभी भी पारंपरिक तरीके से शिक्षा दी जाती है। इसलिए हमारे विश्वविद्यालय वैश्विक प्रतिस्पर्धा में पिछड़ रहे हैं।

शिक्षा व्यवस्था में सबसे बढ़ी खामी यह है कि अभी भी अंकों को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है, इसलिए बच्चे आत्मसंतुष्ट हो जाते हैं और उनमें मौलिकता और रचनात्मकता विकसित नहीं हो पाती। यही कारण है कि हम रचनात्मकता और नवाचार में पिछड़ जाते हैं। इसके लिए प्राथमिक और उच्च स्तर पर शिक्षा को बेहतर बनाने के प्रयास किए जाने चाहिए। शोध और अनुसंधान क्षेत्र की बात करें तो इसकी स्थिति भी अच्छी नहीं है। ऐसा नहीं है कि देश में प्रतिभा की कमी है। देश के युवा जब अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस जैसे देशों में जाते हैं तो वहां उनकी प्रतिभा को पहचान मिलती है और उन्हें नोबेल जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार भी मिलते हैं।

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भारत का युवा दुनिया भर में नाम कमा रहा है, लेकिन प्रतिभाओं के पलायन के कारण हम इसका लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। यह समझना चाहिए कि युवाओं की तरक्की से ही देश तरक्की करेगा। राजनीति से लेकर प्रशासन तक, समाज से लेकर विज्ञान तक, खेल से लेकर व्यापार तक युवाओं की भागीदारी बढ़ेगी, जिस दिन देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। भारत में लोकतंत्र शब्द का अर्थ विरोधाभासी होता जा रहा है। चुनाव और पद के बाद जिम्मेदार आगे बढ़ रहे हैं और जनता चछे हो रही है। यह सालों से चलता आ रहा है। सत्ता मिलने के बाद नेताओं के लिए जनता की भावनाएं मायने नहीं रखतीं। इस वजह से समाज भी पिछड़ रहा है। पहले नेता समाज के मूल्यों के लिए जीते थे और अब इसके मायने बदल रहे हैं। इस वजह से युवाओं का इस ओर ध्यान देना बहुत जरूरी हो गया है। अगर हम हर बढ़ी –छोटी घटना पर विचार करें तो यही बात सामने आती है कि समाज में जिम्मेदारियों के वियोग के कारण ऐसा हो रहा है। यह भी आश्चर्य की बात है कि शिक्षा व्यवस्था में लोकतंत्र जैसी चीजों को बहुत कम महत्व दिया जाता है। इसलिए लोगों की जानकारी के अभाव में समाज भी कमजोर हो रहा है।

इसके लिए नई सोच वाले युवाओं की जरूरत है। उनमें समाज को आगे ले जाने की इच्छाशक्ति होनी चाहिए और उन्हें ईमानदारी से समाज में बदलाव लाने वाले हर काम को करने के लिए आगे आना चाहिए। युवा ही समाज की दिशा बदल सकते हैं। पढ़े –लिखे और समझदार युवाओं को इस बारे में सोचना होगा। हमें सत्ता का मोह छोड़कर लोगों और समाज के हितों के बारे में सोचना होगा।

उसके बाद समाज में निश्चित रूप से बदलाव आएगा। कुछ युवा अपनी पढाई या प्रतियोगी परीक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, इसलिए वे राजनीति में शामिल नहीं होना चाहते हैं। आज भी अच्छे परिवारों से उच्च शिक्षित युवा राजनीति में अपना करियर बनाना चाहते हैं। देश की राजनीति में दिखने वाली कई विसंगतियों को दूर करने के लिए देश के युवाओं को आगे आना होगा। देश की राजनीति को बेहतर बनाने के लिए शिक्षित युवाओं को राजनीति में आना होगा।

हालांकि वंशवाद ने उन्हें राजनीति में बड़ा पद या ओहदा दिलाया है, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इन राजनेताओं ने युवाओं को राजनीति में आने के लिए प्रेरित किया है। मैं अनुभव को नजर अंदाज नहीं कर रहा, लेकिन अगर युवाओं को आगे आने का मौका ही न दिया जाए, तो अनुभव कैसा होगा, आप युवाओं के दस दोष गिनाते हैं। लेकिन आज के तथाकथित दिग्गज राजनेताओं की हरकतों पर हम

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

चुप क्यों हैं?

हम चर्चाओं में लगे रहेंगे कि इस देश को कुछ नहीं होगा, लेकिन युवाओं को चर्चा के मंच से बाहर निकलकर वास्तविकता की कसौटी पर खुद को साबित करना होगा और उनसे उनके अधिकार लेने होंगे। जब देश को सामरिक दृष्टि से सुरक्षित बनाने और देश के प्रत्येक नागरिक को सुरक्षा प्रदान करने के संदर्भ में सैन्य क्षमता और पुलिस प्रशासन की बात आती है, तो युवाओं की भूमिका सर्वोपरि होती है क्योंकि इस क्षेत्र में जितना अधिक युवाओं का प्रतिनिधित्व होगा, यह उतना ही सुरक्षित होगा।

युवाओं की नागरिक और राजनीतिक भागीदारी के पैटर्न से संबंधित कारक

पिछले 50 वर्षों में युवा लोगों के नागरिक और राजनीतिक जुड़ा व के पैटर्न से संबंधित कारकों पर बहुत शोध हुआ है। शोध के इस निकाय ने दिखाया है कि इन कारकों को चार मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता हैरू मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, जनसांख्यिकीय और मैक्रो। मनोवैज्ञानिक कारकों में, उदाहरण के लिए, राजनीतिक ज्ञान होना और राजनीतिक मुद्दों पर ध्यान देना शामिल है, जो दोनों (अम्ना और एकमैन के विपरीत) राजनीतिक और नागरिक भागीदारी दोनों के सुसंगत भविष्यवक्ता होते हैं (डेली कार्पिनी और कीटर, 1996य जुकिन एट अल., 2006)। एक और बहुत महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक आंतरिक राजनीतिक प्रभावकारिता है (जिसे अक्सर अधिक सरल रूप से आंतरिक प्रभावकारिता कहा जाता है)।

यह आत्म–विश्वास है कि कोई व्यक्ति राजनीति को प्रभावी ढंग से समझ सकता है और उसमें भाग ले सकता है। आंतरिक प्रभावकारिता राजनीतिक मुद्दों में रुचि रखने से दृढता से संबंधित है, और जिन लोगों में आंतरिक प्रभावकारिता का उच्च स्तर और राजनीति में उच्च स्तर की रुचि होती है, वे सभी प्रकार की भागीदारी के उच्च स्तर को दिखाते हैं (बैरेट और ब्रंटन–स्मिथ, 2014य ब्रंटन–स्मिथ, 2011)। अन्य महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक जो नागरिक और राजनीतिक भागीदारी से जुड़े हुए हैं, वे हैं विश्वास (उदाहरण के लिए, यह विश्वास कि सामाजिक और राजनीतिक संस्थाएँ आम तौर पर लोगों के लिए हानिकारक होने के बजाय लाभकारी तरीके से काम करेंगी) और भावनाएँ (उदाहरण के लिए, कथित सामाजिक अन्याय के बारे में गुस्सा, अन्य लोगों की मदद करने के लिए मानवीय दायित्व महसूस करना, दूसरों की मदद करने में आनंद)।

इन सभी मनोवैज्ञानिक कारकों और अन्य बातों पर इस पुस्तक के अध्याय 2 में विस्तार से चर्चा की गई है। इन मनोवैज्ञानिक कारकों के अलावा, कई अलग–अलग सामाजिक कारक हैं जो नागरिक और राजनीतिक भागीदारी से संबंधित हैं। सबसे पहले, माता–पिता का व्यवहार कई तरह से युवा लोगों के नागरिक और राजनीतिक भागीदारी के पैटर्न से जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए, जिन व्यक्तियों के माता–पिता नागरिक स्वयंसेवा में शामिल होते हैं, उनमें नागरिक और राजनीतिक भागीदारी का स्तर अधिक होता है, वे सरकार और राजनीति के बारे में खबरों के प्रति अधिक चौकस रहते हैं और उचोक्ता सक्रियता में शामिल होने की अधिक संभावना रखते हैं, जबकि जिन व्यक्तियों के माता–पिता के साथ अक्सर राजनीतिक चर्चा होती है, उनके स्वयंसेवक बनने और वोट देने की संभावना अधिक होती है (जुकिन एट अल., 2006)।

इसके अलावा, माता–पिता के राजनीतिक ज्ञान का स्तर उनकी संतानों के राजनीतिक ज्ञान के स्तर का अनुमान लगाता है (जेनिंग्स, 1996), जबकि जिन व्यक्तियों के माता–पिता विरोध प्रदर्शनों में भाग लेते हैं, उनके भी विरोध प्रदर्शनों में भाग लेने की अधिक संभावना होती है (जेनिंग्स, 2002)। शिक्षा एक और सामाजिक कारक है जो नागरिक और राजनीतिक जुड़ा व से संबंधित है (एमलर और फ्रेजर, 1999 यनी, जुन और स्टेहलिक–बैरी, 1996)।

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

जो छात्र ऐसे स्कूलों में जाते हैं जो नागरिक कौशल (जैसे, पत्र लेखन और वाद–विवाद) में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, उनके स्कूल के बाहर संगठनों में शामिल होने, याचिकाओं पर हस्ताक्षर करने, बहिष्कार में भाग लेने, राजनीतिक समाचारों का अनुसरण करने, धर्मार्थ धन उगाहने में शामिल होने और सामुदायिक बैठकों में भाग लेने की अधिक संभावना होती है (जुकिन एट अल., 2006)। इसके अलावा, अगर स्कूल में एक खुली कक्षा का माहौल है जो युवाओं को नैतिक, सामाजिक, नागरिक और राजनीतिक मुद्दों को उठाने और जांच करने और कक्षा के भीतर अपने और अपने साथियों की राय का पता लगाने में सक्षम बनाता है, तो वे उच्च स्तर की राजनीतिक रुचि, विश्वास और राजनीतिक ज्ञान प्राप्त करते हैं (हैन, 1998 य शुल्ज, ऐनले, फ्राइलन, लॉसिटो, एग्रस्टी और फ्राइडमैन, 2017 य टॉर्नी–पुर्टा, लेहमैन, ओसवाल्ड और शुल्ज, 2001)। इसके अतिरिक्त, स्कूल कक्षाओं में मतदान और चुनावों पर दिया जाने वाला जोर युवाओं के भविष्य के मतदान इरादों का एक और महत्वपूर्ण पूर्वानुमान है (टोर्नी–पुर्टा एट अल., 2001)।

नागरिक और राजनीतिक जुड़ा व और सहकर्मी समूह संबंधों के बीच भी संबंध पाए गए हैं। उदाहरण के लिए, नागरिक और राजनीतिक भागीदारी सहकर्मियों के साथ सकारात्मक संबंध रखने और ऐसे दोस्त रखने से संबंधित है जो नागरिक और राजनीतिक गतिविधियों में शामिल हैं, और जब युवा स्कूल में सहकर्मियों के साथ एकजुटता की भावना महसूस करते हैं, तो वे नागरिक और राजनीतिक लक्ष्यों और मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध होने की अधिक संभावना रखते हैं। नागरिक और राजनीतिक जुड़ा व से संबंधित एक अन्य सामाजिक कारक युवा, समुदाय और धार्मिक संगठनों की सदस्यता है। उदाहरण के लिए, युवा या सामुदायिक संगठनों में भागीदारी जिसमें युवा व्यक्ति विशिष्ट भूमिकाएं निभाने में सक्षम होता है (जैसे गतिविधियों को व्यवस्थित करने और नेतृत्व की भूमिकाएं) प्रोसोशल–उन्मुख राजनीतिक और नागरिक भागीदारी से संबंधित है (अल्बानेसी, सिकोग्नानी और जानी, 2007 य क्विंटेलियर, 2008)। धार्मिक संगठनों से संबंधित होना विशेष रूप से महत्वपूर्ण प्रतीत होता है

युवा लोगों के नागरिक और राजनीतिक जुड़ा व के पैटर्न भी तीन मुख्य जनसांख्यिकीय कारकों से संबंधित हैं सामाजिक–आर्थिक स्थिति (एसईएस), लिंग और जातीयता। उच्च एसईएस वाले व्यक्तियों में नागरिक और राजनीतिक भागीदारी दोनों के समग्र स्तर अधिक होते हैं (हार्ट, एटकिंस और फोर्ड, 1998य जुकिन एट अल. , 2006)। कभी–कभी राजनीतिक ज्ञान और राजनीतिक रुचि में और पुरुष और महिला युवाओं द्वारा की जाने वाली भागीदारी के विशिष्ट रूपों में भी लिंग अंतर होता है (बेनेट और बेनेट, 1989य ब्रोमेन, 2003य वोलक और मैकडेविट, 2011)।

इसके अलावा, जातीय अल्पसंख्यक और जातीय बहुसंख्यक व्यक्ति विभिन्न प्रकार की स्वयंसेवी गतिविधियों में भाग लेते हैं, जिसमें पूर्व अपने स्वयं के जातीय समुदाय और अन्य अल्पसंख्यकों से संबंधित गतिविधियों में अधिक भाग लेते हैं (स्टेपिक, स्टेपिक और लैबिसियर, 2008)। प्रवासी और जातीय अल्पसंख्यक व्यक्तियों की चढ़ीगत स्थिति भागीदारी के पैटर्न से भी जुड़े हुई हैरू उदाहरण के लिए, पहली चढ़ी के बाद की चढ़ियों की तुलना में मतदान के लिए पंजीकृत होने की संभावना कम है (स्टेपिक एट अल., 2008) और बहुसंख्यक समूह के व्यक्तियों की तुलना में वास्तविक मतदान, स्वयंसेवा और बहिष्कार के मामले में भी कम सहभागी हैं (लोपेज और मार्सेलो, 2008)। इसके विपरीत, दूसरी चढ़ी कभी–कभी बहुसंख्यक जातीय समूह से संबंधित व्यक्तियों की तुलना में नागरिक और राजनीतिक रूप से अधिक सक्रिय होती है।

भारतीय राजनीति में युवा नेतृत्व

भारतीय राजनीति में युवा नेतृत्व कई कारणों से महत्वपूर्ण है

1. नया दृष्टिकोण

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

युवा नेता राजनीतिक क्षेत्र में नए विचार और नई दृष्टि लाते हैं, जो देश में बदलाव और प्रगति लाने के लिए आवश्यक है।

1ण युवाओं का प्रतिनिधित्व

भारत एक युवा देश है, जिसकी आबादी का एक बड़ा हिस्सा 35 वर्ष से कम आयु का है। ऐसे युवा नेता आबादी के इस बड हिस्से के हितों का प्रभावी ढंग से प्रतिनिधित्व करने के लिए आवश्यक हैं। डिजिटल सेवी युवा तकनीक के जानकार हैं और डिजिटल उपकरणों से अच्छी तरह वाकिफ हैं, जो राजनीतिक प्रक्रिया को नागरिकों के लिए अधिक पारदर्शी और सुलभ बनाने में मदद कर सकते हैं।

2ण ऊर्जा और उत्साह

युवा नेता राजनीति में ऊर्जा और उत्साह लाते हैं, जो दूसरों को राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित कर सकता है।

4. समावेशिता

युवा नेता राजनीति में विविध और समावेशी दृष्टिकोण लाने की अधिक संभावना रखते हैं, ऐसी नीतियों को बढ़ावा देते हैं जो आबादी के सभी वर्गों को लाभान्वित करती हैं, चाहे उनकी उम्र, लिंग या सामाजिक–आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। भारत में आवश्यक राजनीतिक परिवर्तन की जांच

निष्कर्ष

उच्च राजनीतिक रुचि और राजनीतिक प्रभावकारिता होने से व्यक्तियों के राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने की अधिक संभावना होती है, और इन दोनों दृष्टिकोणों के कुछ तत्व परस्पर सहायक होते हैं। इसके अलावा, किशोरों की राजनीतिक भागीदारी कानूनी मतदान की आयु के करीब पहुंचने पर बढ़ती हुई प्रतीत होती है। शोधकर्ताओं को उन तरीकों और सीमा का अध्ययन करना जारी रखना चाहिए, जिससे अपेक्षा–मूल्य मॉडल राजनीतिक भागीदारी के विभिन्न पहलुओं और छात्रों की राजनीतिक भागीदारी समय के साथ किस हद तक विकसित होती है, को समझा सकता है। इस बीच, किशोरों की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देने में रुचि रखने वाले शिक्षकों को अपने छात्रों के बीच राजनीतिक प्रभावकारिता और रुचि का समर्थन करने के लिए रणनीतियों का पता लगाना चाहिए और उन्हें लागू करना चाहिए।

संदर्भ

[1] झांग, वेइयू. (2022). युवाओं में राजनीतिक अलगाववरू 2011 और 2020 के बीच तुलना. फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी. 13. 809432. 10.3389धचैलह.2022.809432.

[2] बिनी, एलिजाबेथ और अमोएटेंग, एचेमपोंग। (2019)। युवा राजनीतिक भागीदारीरू घाना विश्वविद्यालय में स्नातक छात्रों का एक गुणात्मक अध्ययन। ।थ्थ्त्ब्झ। जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स, इकोनॉमिक्स एंड सोसाइटी। 1. 9–25. 10.31920ध्2075–6534ध्2019ध्1दं1।

[3] बैरेट, मार्टिन और दिमित्रा, पाची. (2019). युवाओं में नागरिक और राजनीतिक जुड़ा व. 10. 4324ध्9780429025570–1.

[4] पारख, नदीशांत. (2020). चीनी राजनीति में युवाओं का प्रतिनिधित्वरू भारतीय चीनी नीतियों का विश्लेषण. जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स एंड जियोग्राफी. 8. 43–59.

[5] काली, मोकेत्सी और रोमा, (2014)। युवाओं में राजनीतिक भागीदारी का मूल्यांकन स्तररू छन्स्. 10. 13140ध्त्ळ.2.2.27365.63202 का मामला।

[6] रीबा, जे. बा और पनगढिया, च. (2021). अरुणाचल प्रदेश में युवा रंगमंच का उदयरू एक सैद्धांतिक अध्याय. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक आयुष्मान. 10.9790ध्0837–2602020110.

[7] कुमार, शशिर और शमा, अमित और वर्मा, वरंदर. (2021). भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिकारू भारतीय विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच सोशल मीडिया और राजनीति पर एक सैद्धांतिक अध्याय. जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड पॉलिटिक्स. 4. 82–89.

[8] शर्मा, भुवनेश और परमा, स्वर्णा (2017)। मतदाता व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव–ग्वालियर, मध्य प्रदेश का एक वर्णनात्मक अध्ययन। 10.13140ध्त्ळ.2.2.29416.26880। 10.12944ध्बतरी.4.1.08.

[9] पारख, नदीशांत. (2020). चीनी राजनीति में युवाओं का प्रतिनिधित्वरू भारतीय चीनी नीतियों का विश्लेषण. जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स एंड जियोग्राफी. 8. 43–59.

[10] चौधरी, प्रमुख. (2023). भारत की राजनीतिक व्यवस्था के लिए यह अध्याय किस तरह की प्रतिभा या लूट है. जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस एंड जियोग्राफी. 3. 1–6. 10.55544ध्परतं.3.1.1.

[11] नटवारी, भुवी. एवेंसलैंडा, भूपाल. (2023). कोविड–19 महामारी के बाद भारतीय राजनीति पर सोशल मीडिया का प्रभाव. एकता जियाल, आयुष्मान्ति इन आर्ट एंड ह्यूमैनिटी. 3. 105–112.10.55544ध्परती.3.3.17.

[12] कुमार, आशुतोष एस. (2019). भारत में राज्य स्तर पर राजनीतिरू निरंकुशता और प्रगति. इंडिया रिव्यू. 18. 264–287.10.1080ध्14736489.2019.1616260.

[13] महमूद, एस और अवाई, डॉ. अब्दुल. (2019).राजनीति में युवाओं की भागीदारी में सोशल मीडिया की भूमिकारू नाजला खैवाल द्वारा एक केस चौप्टर. 5. 718–742.

[14] रीबा, जे बा और परग्राही, च और छात्र, डॉक्टरेट.(2022). अरुणाचल प्रदेश में युवाओं की सोशल मीडिया और राजनीतिक जागरूकतारू संख्याओं का एक केस स्टडी. जर्नल ऑफ इंटरनेशनल सिनेसाइंस रिसर्च. खंड ग्प्प्. 284– 299.

[15] राज.एम., कंसनमार. (2014). आयरलैंड और भारत में युवा जागरूकतारू एक तुलनात्मक अध्याय।